॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे प्रातःकाल की अग्नि! तू हवि है : तू हव्य पदार्थों को उत्पन्न करने वाली है। तू हमें हव्य पदार्थों का पान करा, जिससे हम देवता बन जाएँ और देवतागणों के समाज में विराजमान होकर देववाणियों को विचारें। हमारी हर स्थान में देवप्रवृत्ति ही बनी रहे। हे परमात्मन! तू कल्याण करने वाला है, हमारे कल्याण के लिए तूने नाना सामग्री उत्पन्न की है। हे प्रभु! हम आपसे कल्याण चाहते हैं।

हे इन्द्र! इस संसार को नियम से बनाने वाले! हमारे जीवन को भी नियमित बना। जब हमारा जीवन नियमित होगा, तो हम कुछ कार्य कर सकेंगे। आपने प्रातःकाल में सूर्य को उत्पन्न किया है। इसी प्रकार हे देव! हम उस महान ज्योति को चाहते हैं जिससे हमारा आत्मिक-कल्याण हो। वह कौन-सी ज्योति है?

वह ज्योति हमारी संध्या की व्याहृतियाँ हैं। जब संध्या की व्याहृतियों को जाना जाता है तो वह संध्या वास्तव में हमारा कल्याण करा देती हैं। जब देवता संध्या के द्वार पर जाते हैं तो संध्या पुकार कर कहती है कि तुम यदि मेरा आदर करोगे, अनुकरण करोगे, तो संसार में देवता बन जाओंगे। यदि तुम मुझे ठुकराओगे तो तुम संसार में ठुकराए जाओगे।

अतः संध्या के अनुकरण से मनुष्य का हृदय निर्मल और स्वच्छ बन जाता है और जिस मनुष्य का हृदय निर्मल और स्वच्छ बन गया, उसका वास्तव में कल्याण हो गया।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 552 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 627
वर्ष : 46 44 समग्र वर्ष : 53

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. ऊर्ध्वा-याग	पूज्यपाद-गुरुदेव एवं पूज्य महानन्द जी	5-23
4. शिव-सङ्कल्प व्याख्या	पूज्यपाद-गुरुदेव	24-32
5. कृष्ण का उपदेश	पूज्यपाद-गुरुदेव	32-35
6. ऋषियों के उद्‌गार		36
7. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		37-42

पूज्यपाद गुरुदेव का जन्मोत्सव

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज, आदि गुरु ब्रह्मा जी के परम प्रिय शिष्य के 76वें जन्मोत्सव के शुभावसर पर दिनाँक 26 सितम्बर से 28 सितम्बर 2018 तक गुरुदेव की कर्मभूमि एवम् निर्माणीत यज्ञीय स्थली लाक्षागृह बरनावा में सामवेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ के आयोजन द्वारा प्रति वर्ष की भाँति बड़े हर्षोल्लास के साथ गाँधी धाम समिति (पञ्जी.) के द्वारा मनाया जा रहा है।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि योग निष्ठ गुरुदेव द्वारा पुनः से प्रज्वलित इस यज्ञ ज्योति को निरन्तर ऊर्ध्वा में ले जाने के लिए आप अपने परिवार, सगे-सम्बन्धी एवम् मित्रों सहित भाग लेकर आहुति प्रदान करके पुण्य के भागी बनें।

श्री गाँधी धाम समिति (पञ्जी.)

॥ ओ३म् ॥

ऊर्ध्वा-याग

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। क्योंकि हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस महामना मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है जो संसार का नियन्ता है, निर्माण करने वाला है। मानो उस परमापिता की महिमा प्रकृति के एक-एक कण-कण में दृष्टिपात आ रही है। जिस भी काल में याज्ञिक पुरुषों ने, वैज्ञानिकों ने विज्ञान के ऊपर अनुसन्धान किया है अथवा यागों के सम्बन्ध में विचार-विनिमय किया है उसी समय परमपिता परमात्मा बेटा! विज्ञानमय स्वरूप दृष्टिपात आया है। मानो उसी काल में वह विज्ञानमय स्वरूप दृष्टिपात आता रहा है। तो इसीलिए परमापिता परमात्मा विज्ञानमयी स्वरूप और यज्ञोमयी स्वरूप माने गए हैं। इसके ऊपर हमारे यहाँ परम्परागतों से ही बेटा! भिन्न-भिन्न प्रकार का अन्वेषण होता रहा है अथवा विचार-विनिमय होता रहा है कि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप, क्योंकि याग उसका आयतन माना गया है। परमपिता परमात्मा ने ये संसाररूपी यज्ञशाला का निर्माण किया है क्योंकि ये संसार एक यज्ञोमयी माना गया है। यहाँ प्रत्येक प्राणी याज्ञिक बना हुआ है, प्रत्येक प्राणी अपने में आभा को प्राप्त करना चाहता है। मेरे प्यारे! देखो माता अपने में यज्ञोमयी बनी हुई है। परमपिता परमात्मा का तो ये ब्रह्माण्ड एक यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है। प्रत्येक लोक-लोकान्तरों में मानो उस प्रभु की महती का वर्णन हो रहा है। नाना प्रकार के प्राणी उस प्रभु के गान में लगे हुए हैं। मानो प्रकृति अपने में जड़वत् होते हुए

चेतना का सन्निधान मात्र से बेटा! उसके स्वभाव में एक अनुपमता आ जाती है अथवा एक महानता का दिग्दर्शन होने लगता है। तो हमें विचारना है कि प्रकृति अपने में मानो स्वरूपमयी मानी गयी है। चेतना का सन्निधान मात्र होते ही उसके नाना स्वरूप हमारे समीप आने प्रारम्भ हो जाते हैं।

ऋषि मुनियों द्वारा ब्रह्मवर्चोसि का दर्शन

मेरे प्यारे! मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा है कि हमारे यहाँ वैज्ञानिकों ने यज्ञशाला में विद्यमान हो करके नाना प्रकार के यन्त्रों का भी निर्माण किया है। मेरे प्यारे! देखो एक समय वैशम्पायन ऋषि महाराज और ब्रह्मचारी सुकेता और ब्रह्मचारी कवन्धि और ब्रह्मचारी रोहणीकेतु और ब्रह्मचारी यज्ञदत्ता व नाना ऋषिवर बेटा! ब्रह्मवर्चोसि का दर्शन कर रहे थे। एक समय बेटा! उनके समीप एक मन्त्र आया वो वेद का मन्त्रः महान् अपनी आभा को प्रकट कर रहा था। ''चित्रम् रक्षम् ब्रह्मवहा वारणवस्तिहीवर्चो वस्सुतम स्वाहा'', मेरे प्यारे! इस वेद मन्त्रः में एक आख्यायिका आई है और आख्यायिका का अभिप्राय ये है क्या वेद मन्त्रः कहता है कि जो यजमान अपनी यज्ञशाला में होताजन विद्यमान हो करके स्वाहा उच्चारण करते हैं मानो वह जो स्वाहा शब्द है जो वेद मन्त्रों से सुगठित है अथवा वेद मन्त्रों से गुथा हुआ है वह शब्द द्यौलोक को जाता है। वो द्यौलोक को प्राप्त हो करके मानो वह अन्तरिक्ष की आभा में अगम्यमयी हृदय में मानो उसका वास हो जाता है। तो मेरे प्यारे! वेद का मन्त्रः मानो यह आख्यायिका प्रकट करते हुए ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धि, वैशम्पायन के चरणों में विद्यमान हो करके इसके ऊपर गम्भीर मनन होने लगा। परन्तु देखो सायँ काल हो गया, रात्रि छा गयी, परन्तु मध्य रात्रि आ गयी व प्रातःकालीन हो गया वह अपने में निमटारा नहीं कर सके। वेद मन्त्रः के ऊपर ये निमटारा करना था क्या यजमान का

स्वाहाः मानो देखो इसका चित्र बन करके वो रथ के ऊपर विद्यमान जो जाता है। वे मानो देखो यज्ञशाला का रथ बन जाता है और उस रथ पर विद्यमान हो करके मानो देखो प्रत्येक यज्जम् ब्रह्मे होताजन, अध्वर्यु, उद्गाता, यजमान मानो पुरोहित इत्यादि जन यजमान सब उस रथ के ऊपर विद्यमान हो करके वह द्यौलोक को रथ गमन करता रहता है। मेरे प्यारे! वेद मन्त्रों में ये आख्यायिका आयी परन्तु जब ये आख्यायिका आई तो विचार करने लगे। विचार करते हुए बहुत गम्भीर मुद्रा में परणित हो गए। विचार में नहीं आ रहा था परन्तु ब्रह्मचारी कवन्धि और मुनिवरो! देखो वैशम्पायन नाना ऋषि अब्रहो अपने में धारणा में अप्राहा विचार बना करके उन्होंने वहाँ से गमन किया और भ्रमण करते हुए चिन्तन में लगे रहे।

यज्ञोमयी कर्म का दिग्दर्शन

भ्रमण करते हुए वे मानो शिकामकेतु ऋषि के द्वार पर पहुँचे। शिकामकेतु ऋषि महाराज, वे मेरे प्यारे! उद्दालक गोत्रिय कहलाते थे। जब उद्दालक गोत्रिय ऋषि के द्वारा पहुँचे तो उन्होंने कहा प्रभु यजमान का रथ बन के कैसे द्यौलोक को जाता है। तो मेरे प्यारे! शिकामकेतु ऋषि ने कहा कि तुम भारद्वाज मुनि के द्वार पर क्यों नहीं जाते हो। मानो देखो ये जो ब्रह्मचारी सुकेता हैं, कवन्धि हैं, ये तो भारद्वाज मुनि के यहाँ इसका अनुसन्धान अथवा अन्वेषण में लगे रहते हैं। ये आज कैसे तुम्हारे प्रहाव्रहे मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कहा प्रभु हम तो तुम्हारे द्वारा भी कुछ जानना चाहते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो उस समय उन्होंने कहा क्या सम्भूति ब्रह्मवाचाः यन्त्रों। उन्होंने बेटा! नाना यन्त्र दृष्टिपात कराए और उन यन्त्रों में ये विशेषता थी मेरे प्यारे! जैसे यजमान स्वाहाः कहता था उनके शब्द और जितने यज्ञशाला के अङ्ग सङ्ग विद्यमान शब्दों के साथ में उनका चित्र बनकर द्यौलोक को जाने लगा। बेटा! अग्नि की तरङ्गों पर विद्यमान होकर करके वही तो द्यौलोक में जाता है। आज

जब मैं विज्ञान के वाङ्मय में प्रवेश करने लगता हूँ तो बेटा! हमें यह प्रतीत होता है क्या ऋषि-मुनियों ने विज्ञान को कितनी ऊर्ध्वा से जाना है। विज्ञान अपने में कितना अनूठा रहा है। परन्तु ऋषि-मुनियों ने अपने पिता, महापिता, मानों पड़पिता, नाना ऋषियों के ऊपर बेटा! उन्होंने उसके ऊपर अन्वेषण किया है। विचार-विनिमय किया है। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कहा, शिकामकेतु ऋषि महाराज ने बेटा! अपने यहाँ नाना यन्त्रों का दिग्दर्शन कराया। जैसे याग प्रारम्भ हुआ यज्ञ के प्रारम्भ होते ही उन्होंने एक यन्त्र का उन्होंने दिग्दर्शन कराया और ये कहा कि देखो यन्त्र में जो स्वाहा उच्चारण कर रहा है उसके चित्र आ रहे हैं। मानो उसका चित्र अन्तरिक्ष में क्या मेरे प्यारे! यन्त्रों में दृष्टिपात आने लगा। मुनिवरो! देखो आगे उन्होंने यन्त्रों का दिग्दर्शन कराया। तो मेरे प्यारे! पिता, महापिता, पड़पिता मेरे पुत्रो! देखो उन्होंने पचासवें महापिता से ले करके और जो संसार में नहीं थे मानो देखो उनका क्रियाकलाप उनके शब्दों के साथ में जो चित्र थे वे मानो उनके यन्त्रों में दृष्टिपात आने लगे। तो मेरे प्यारे वे जो यन्त्रों ब्रह्मा वाचन्नमम् ब्रहे मेरे प्यारे! ऋषि-मुनियों का ये विज्ञान एक अपने में अनूठा रहा है, अपने में ये विज्ञान अनूठेपन में निहित रहा है। तो मुनिवरो! देखो जिस समय उनके चित्रों का दर्शन हुआ तो शिकामकेतु उनकी पत्नि मानो बृहीवाचकेतु बोली कि महाराज ये क्या कर रहे हो। उन्होंने कहा कि मैं देवी हमारे जो पड़पिता, महापिता मानो देखो जिनके शब्दों के साथ में चित्र अन्तरिक्ष में गति कर रहे हैं, उनको यन्त्रों के द्वारा हम दृष्टिपात कर रहे हैं।

मानो देखो पचासवें महापिता का दिग्दर्शन कर रहे हैं। उनके पिता थे जो मानो सातवें महापिता थे। मेरे प्यारे! देखो सातवें महापिता वो यजम् भविताम् ब्रह्मवाचो देवाः। मेरे पुत्रो! देखो याग करते थे, वे मानो साधना में परणित रहते थे। उनका आयु लगभग मानो देखो तीन

सौ वर्ष का आयु हो करके वह संसार से चले गये। मेरे प्यारे! उनका जितना भी क्रियाकलाप था, जितना यज्ञोमयी कर्म था, अग्नि-होत्र था स्वाहाः के साथ में जो गति कर रहा था। बेटा! उसका सर्वत्र चित्र मुनिवरो! देखो उनके यन्त्रों में दृष्टिपात आ रहा था। मेरे प्यारे क्रियात्मक अपने जीवन को बनाना है।

विज्ञान की उपलब्धि

हमारे ऋषि-मुनियों ने, आचार्यों ने बहुत अनुसन्धान किया बेटा! क्रियात्मक। एक-एक वेद मन्त्रः को उच्चारण करना कोई आश्चर्य नहीं है परन्तु एक वेद के मन्त्रः के ऊपर अनुसन्धान करना, उसको क्रिया में लाना मेरे प्यारे! देखो जीवन के जीवन समाप्त हो जाते हैं। मेरे प्यारे! अनुष्ठान में लगे रहते हैं, विचारते रहते हैं। क्या **वेद के मन्त्रों के शब्दों को जब विभक्त करते है तो बेटा! उसमें अनन्त ब्रह्माण्ड का निकास हो जाता है, उसमें अनन्तमयी धारा का जन्म हो जाता है और वे जो अनन्तमयी धारा का जन्म है वही तो बेटा! देखो विज्ञान की उपलब्धि में, मानव को–मानव की विज्ञान की वही उपलब्धि कहलाती है।** हमारे यहाँ भारद्वाज क्या और मुनिवरो! देखो यहाँ उद्दालक गोत्र में नाना ऋषि इसी प्रकार के हुए हैं जिन्होंने बेटा! आध्यात्मिकवाद और मानो भौतिक विज्ञान के ऊपर अपना क्रियात्मक मानो क्रियाकलाप किया है। उन क्रियाकलापों में मानव को अपने में रत्त रहना चाहिए। आज मैं विज्ञान के युग में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ।

पवित्रतम् जीवन

आज का विचार क्या है? मानो आज हम बेटा! ये उच्चारण कर रहे थे कि मानव को याज्ञिक बनना चाहिए। परमपिता परमात्मा ने मेरे प्यारे! **ये जो हृदय अगम्य अन्तरिक्ष है इसमें बेटा! सर्वत्र शब्द प्रतिष्ठित हो जाते हैं और वे शब्द अपने में क्रियात्मक बने रहते**

हैं। तो उन क्रियात्मक जीवन को पाना अथवा उसको अपने अनुष्ठान में लाना यह उनका बहुत प्रियतम कहलाता है। एक मानव तो वाणी से उद्गार दे रहा है, एक मानव अपने में उद्गार देकर के क्रियात्मक बना रहा है। बेटा! क्रियात्मक जो जीवन है, वो उसका सार्थक है, वो उसका महान् है, वो उसका पवित्रतम् कहलाता है। आओ मेरे प्यारे! आज विशेष चर्चाएँ मैं देने नहीं आया हूँ, विचार क्या, हमारा वेद मन्त्रः क्या कहता है। वेद कहता है चित्रम् गत्प्रवाहाः वायु द्यौलोकाः, मेरे प्यारे! वही तो शब्द हमारा वेद ध्वनित हो करके देवलोक में प्रवेश करता है। वही ध्वनित हो करके मानो सूर्य की तरङ्गों में तरङ्गित हो जाता है। वही मुनिवरो! देखो शब्द मानो देखो समुद्रों से मिलान हो करके वे मेघों में परणित हो करके वही मेरे प्यारे! देखो ध्वनि के साथ में आपो की ज्योति मुनिवरो! ज्योतिवान हो करके वृष्टि के रूप में नाना प्रकार के व्यञ्जनों को बेटा! ये पृथ्वी माता जन्म देने वाली है। आओ मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष चर्चा देने नहीं आया हूँ। आज मेरे प्यारे! महानन्द जी कुछ शब्दों की उच्चारणा में लगे हुए हैं। उनकी उत्कृष्ट इच्छा रहती है कि मैं कुछ वाक्य उच्चारण करूँ परन्तु देखो आज का हमारा ये वाक् अब समाप्त होने जा रहा है। अब मेरे प्यारे! महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्गार

ओ३म् यशासर्वम् भद्राहः वाचन्नमः दिव्याम् मनुः।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अभी-अभी ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ रहे थे। क्योंकि इनके यहाँ ज्ञान और विज्ञान की उड़ान प्रायः उड़ी जाती है और हमारा हृदय उन ज्ञान और विज्ञान की वार्त्ताओं को अपने में धारण करके मानो हर्ष ध्वनियाँ करते रहते हैं और ये प्रार्थना करते रहते हैं क्या इनका ज्ञान और विज्ञान कितना अनुपम–मानो वेद में क्या-क्या वस्तु है। आज का

जो यह मानव है–हमारी यह आकाशवाणी मानो देखो पृथ्वी मण्डल पर अभ्रो अभ्योदय हो रही है। आज जिस स्थली पर हमारी यह आकाशवाणी मानो जा रही है वहाँ एक यजोन्शी का पठन-पाठन हुआ परन्तु याग हुआ। उस याग को दृष्टिपात करके मेरा अन्तर्हृदय गद्गद् हो जाता है और मैं ये कहा करता हूँ क्या हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे क्योंकि जिस गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता है, जिन गृहों में बुद्धिमानों का प्रायः पूजन होता है, उनका सत्कार होता है वह यजमान मानो सौभाग्यशाली है। आज उनके जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे मेरी ये सदैव कामना रहती है। मेरा अन्तर्हृदय मानो यजमान के साथ रहता है।

याग कर्म

आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को कुछ परिचय कराने के लिए आया हूँ। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मानो नाना प्रकार के ज्ञान और विज्ञान की चर्चा करते रहते हैं और भिन्न-भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ते रहते हैं। वे याग के सम्बन्ध में भी अपने बहुत गम्भीर मुद्रा में हमें मुद्रित कर देते हैं। परन्तु जब हम ये विचारते हैं कि पूज्यपाद गुरुदेव जो उच्चारण कर रहे हैं उसके आधुनिक जगत में मानो उस कथनी में बहुत अन्तर्द्वन्द्व हो गया है, उसमें बहुत अन्तर मानो देखो अन्तरवृही वाचो हो गया है। जिससे हम ये विचारते रहते हैं क्या मानो देखो यागों का चलन हमारे यहाँ परम्परागतों से ही माना गया है। सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके मानो नाना ऋषि-मुनियों की ये विचारधारा अथवा उनके विचारों की यह उलपब्धि कहलाती है। उनका विचार इस वाङ्मय में पहुँचा है क्या याग एक ऐसा प्रिय कर्म है जिस कर्म को करने के पश्चात् मानव अपने में आनन्दित हो जाता है। अन्तरात्मा प्रसन्न हो जाता है। वह जो अन्तरात्मा जब प्रसन्न हो जाता है तो वही ज्ञान और विज्ञान की उपलब्धि में ले जाता है मानव को, तो ऐसा मेरा

अनुभव हुआ है। देखो महाभारत काल से पूर्व ये पद्धतियाँ बड़ी विचित्र आभा में रही हैं परन्तु कर्मकाण्ड में कर्मकाण्डित रही हैं। आज कोई मानव नाना प्रकार की रूढ़ियों में मानव वेद की धारा को ले गया है।

आधुनिक बुद्धिमान समाज

मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये कहा था कि आधुनिक काल का जो बुद्धिमान समाज है वो ये कहता है क्या ओ३म् का उच्चारण क्यों किया जाता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने इससे पूर्वकाल में अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने मानो वेद मन्त्रः के प्रारम्भ में ओ३म् की ध्वनि का एक विशेष वर्णन किया परन्तु देखो वो वह गम्भीर मुद्रा में ले जाते हैं। परन्तु हम भी उन वाक्यों को स्वीकार करते हैं। परन्तु आधुनिक काल में बहुत से कर्मकाण्ड को एक पाखण्ड कह करके मानव अपने में शान्त हो जाता है। परन्तु विचारा नहीं जाता क्या पाखण्ड की मीमांसा क्या है। जब मैं ये प्रश्न करता हूँ कि पाखण्ड की मीमांसा क्या है तो पाखण्ड की मीमांसा कोई प्राणी नहीं कर पाता। केवल मैं तो ये स्वीकार करता हूँ क्या पाखण्ड सबसे प्रथम तो वह है जो मानव वेद को अपना रहा है परन्तु वेद के अनुकूल अपने आचरणों को नहीं बना रहा है, वो सबसे प्रथम मानो एक पाखण्ड कहलाता है। हमारे यहाँ प्रारम्भ में बहुत परम्परा कालों में ऐसा कहा जाता है कि जब ब्रह्मचारी विद्यालय में अध्ययन करते थे तो ब्रह्मचारियों का निर्माण अथवा उनके क्रियात्मक जीवन को बनाने वाला पूज्यपाद गुरु होता और वह गुरु उनके आचरणों को पवित्र बना देता था। राष्ट्र की उपलब्धि क्या सर्वाङ्ग अङ्ग वह विद्या को प्रदान करके उस ब्रह्मचारी को दीक्षा प्रदान करता था। परन्तु आधुनिक काल में वह बहुत दूरी काल चला गया है। मानो देखो उसमें नाना प्रकार के अङ्ग बना दिए हैं। जहाँ विद्यालयों में आचार्यों के संरक्षण में ब्रह्मचारी प्रारम्भ से ले करके मानो अन्तिम चरण तक वह सर्वाङ्ग अङ्ग बना दिया जाता–वे क्रीड़ा में क्या

और देखो वह व्याख्यानों में क्या उप-व्याख्यानों में नाना प्रकार की विद्याओं में परणित कराना ये आचार्यों का कर्तव्य था। आयुर्वेद में क्या आयु का निदान करना, केवल देखो तपस्या में परणित कराना ये सर्वत्र उनका एक क्रियाकलाप माना जाता, उसको क्रियात्मकता में लाने के लिए सदैव तत्पर रहते थे। परन्तु वह काल कहाँ चला गया, उस काल के–आधुनिक काल का जो विद्यालय है वो एक पाखण्ड कह दूँ तो मेरे लिए एक मानो देखो अतिशयोक्ति नहीं होंगी। आज मैं जब विद्यालयों में प्रवेश करता हूँ तो विद्यालय में ब्रह्मचारियों को निठल्लापन, मानो देखो वह उग्र-उग्रपन का निर्माण किया जाता है परन्तु उनको वास्तविक विद्या से वंचित कर देता है। आज देखो क्या मैं इसको उच्चारण करूँ ये राष्ट्र की कोई महान् उपलब्धि नहीं है, ये राष्ट्र का एक मानो देखो हीनपना है।

आधुनिक काल में यागों का चलन

आज मैं इन विचारों में भी नहीं जाना चाहता हूँ परन्तु देखो विचार ये देने के लिए आज जैसे हमारे इन यागों का चलन है इन यागों के चलन में बुद्धिमान समाज जिन्हें कहता है उन बुद्धिमान समाजों का मानो देखो एक उनके लिए क्रीड़ा स्थली अशुद्ध बन गई है। केवल उदर तक उदर की पूर्तित्व के लिए आधुनिक काल में महाभारत काल के पश्चात् यागों की उपलब्धि केवल इतनी स्वीकार कर ली कि हमारे उदर की पूर्ति हो जाएँ। कर्तव्य का पालन नहीं रहा। यागों में मानो देखो जब रसना के स्वादान आएँ तो नाना प्रकार के पशुओं को मानो देखो बलि पर परणित करने लगे। मानो देखो विचारा नहीं गया, बलि को विचारा नहीं गया कि बलि क्या है। मेरे प्यारे! जहाँ पुरुषार्थ करने का नाम बलि माना गया है वहाँ उसके मांसों की आहुति प्रदान करने लगे। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही ऋषि-मुनियों ने देखो एक वाजपेयी याग का वर्णन कराया। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वाजपेयी यागों का वर्णन

कराया। तो वाजपेयी यागों में बलि की देखो बैल की बलि का वर्णन है गऊ वृख का ये जो गऊ का बछड़ा है इसको वृख कहते हैं, इसको बैलङ्ग भी कहते हैं। परन्तु देखो इसकी बलि का वर्णन है जब मैं ये विचारने लगता हूँ आधुनिक काल में ये कैसी उपलब्धि मानव के समीप आयी है। अरे! **यहाँ बैल की बलि का अभिप्राय केवल देखो पुरुषार्थ माना गया है।** प्रत्येक प्राणी को पुरुषार्थ करना चाहिए और जो पुरुषार्थ है वही बलि है। परन्तु बलि का अर्थ ये स्वीकार कर लिया क्या इसके अङ्गों को देखो वह रक्त बहाने लगे और देखो उसे यज्ञशाला में परणित करने से ही यज्ञों का कर्मकाण्ड, कर्मकाण्ड से मानो विहीन हो गया। जब विहीन हो गया देखो, गऊ का बछड़ा क्या मानो देखो अजामेध में अजा, देखो बकरी का बलिदान करने लगे। गौमेध याग में गौ का बलिदान करने लगे, उसको बलि में परणित करने लगे। यहाँ मानो देखो ये वाक्य, उन्होंने देखो इसको वाम मार्ग समप्रदा कहते हैं। **वाम मार्ग उसे कहते हैं जो वास्तविक मार्ग को त्याग करके, अपने स्वार्थ के मार्ग को अपना लेता है।** मानो देखो स्वार्थ के मार्ग को अपना करके मानव अपने में मानवीयता से विहीन हो जाता है।

आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को ये वर्णन कराना चाहता हूँ जब ये मोक्ष की पगडण्डी है, मोक्ष का प्रारम्भ का याग कर्म है, शब्दों की उपलब्धि का प्रथम चरण है तो इसमें हिंसा का कौन-सा क्रियाकलाप ऐसा है। आज जब मैं ये विचारता हूँ राष्ट्रवाद में सबसे प्रथम हिंसा आयी। महाभारत काल के पश्चात् राष्ट्रवाद नहीं रहा। राष्ट्रवाद ने अपने कर्तव्य का पालन नहीं किया है। जो राष्ट्रवाद अपने में कर्तव्य का पालन करता, तो ये मानो अशुद्धियाँ धर्म पारायण में नहीं आ सकती थीं। नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बन गईं, उसी के कारण नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बनी, देखो, यज्ञों का खण्डन, यज्ञों में अशुद्धियाँ आने से ही नाना प्रकार के देखो सम्प्रदायों का उत्थान हुआ, नाना सम्प्रदायों का

जन्म हुआ, उन नाना प्रकार के सम्प्रदायों ने सबसे प्रथम याग को न जान करके उसी के ऊपर उन्होंने आक्रमण करना प्रारम्भ किया। मानो देखो मौहम्मद के मानने वालो ने भी इसी के ऊपर आक्रमण किया है, ईसा के मानने वालो ने भी इसी के ऊपर आक्रमण किया, देखो यह बौद्ध के मानने वालो ने भी इसी के ऊपर आक्रमण किया, नानक के मानने वालों ने भी इसी के ऊपर आक्रमण किया और महावीर के मानने वालो ने भी इसी याग के ऊपर नाना आक्रमण किए हैं। उस आक्रमण का परिणाम यह हुआ क्या मानव के हृदय से मानो देखो वह अश्रद्धा में परणित हो गया। अब याग की कहाँ उपलब्धि आ गयी, उदर की पूर्ति करने वाले स्वार्थी ब्रह्म समाज ने मानो देखो वे ब्रह्म समाज तो मैं उन्हें नहीं कहता हूँ, मैं केवल स्वार्थी कहा करता हूँ।

ब्राह्मण और यजमान

ब्राह्मणों का तो कर्तव्य है कि यजमान को ऊर्ध्वा में ले जाएँ, परन्तु देखो जो स्वार्थी ब्राह्मण बने, केवल जातीयता के आधार पर, मानो देखो उन्होंने याग को इतना स्वीकार कर लिया किसी के बाल्य उत्पन्न हुआ, वहाँ याग कर लिया, दक्षिणा प्राप्त हो गयी, उदर की पूर्ति हो गयी। परन्तु देखो कहीं संस्कार में, देखो बाल्य ब्रह्मचारी का संस्कार हो रहा है उस संस्कार में मानो देखो उस संस्कार में याग किया, परिक्रमा देखो अशुद्धियाँ कीं और अपने उदर की पूर्ति हो रही है। तो विचार-विनिमय क्या, मानो देखो पाण्डित्व समाज इतना हीनता को प्राप्त हो गया क्या ब्राह्मण की पूजा नहीं रही, ब्राह्मण की पूजा में अशुद्धियाँ आ गईं। ब्राह्मण का, मानो देखो, ब्राह्मण का तो लक्ष्य केवल द्रव्य तक रह गया और यजमान का लक्ष्य इतना रह गया क्या वह अपना द्रव्य उसे प्रदान कर देता है, कर्मकाण्ड मानो देखो हो या न हो उसे इससे कोई तात्पर्य, अथवा प्रयोजन नहीं है।

याग तिरस्कार का परिणाम

विचार-विनिमय क्या मैं विशेष चर्चाएँ देना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल ये दे रहा हूँ जो समाज में हो रहा है, जो समाज में मुझे दृष्टिपात आता है। जब मैं विचारता हूँ राष्ट्र के द्वारा जाता हूँ तो राजा भी इस प्रकार के स्वार्थी मानो देखो ब्राह्मणों को लेकर के अपने मानो रेखा तक सीमित रहता है। उसकी राष्ट्रीय पद्धति बनी रहे, ये समाज या राष्ट्र किसी भी आङ्गन को चला जाए उसे इससे कोई सरोकार नहीं है। कोई भी मानो देखो उसका कोई प्रयोजन नहीं है कि आज मैं देखो अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाऊँ। अपने राष्ट्र में अग्नि प्रदीप्त हो रही है, विचारों की अग्नियाँ मानो एक विचारों का द्वितीय विचारों पर आक्रमण हो रहा है। उसके मूल में यही है कि यज्ञ का, देखो याग का तिरस्कार किया, याग का तिरस्कार करने से मानो देखो कहीं मुहम्मद के मानने वालो की पूजा हो रही है, कहीं देखो ईसा के मानने वालों की पूजा हो रही है, कहीं देखो नानक के मानने वालो की पूजा है। इसी प्रकार कहीं बौद्ध और देखो कहीं महावीर के मानने वालो की उपलब्धियाँ प्रारम्भ हो रही है।

पवित्र समाज

जब मैं इन विचारों में जाता हूँ कैसे इनका निराकरण हो, कैसे ये ऊँचे बने तो देखो जैसा मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने विष्णु की व्याख्या करते हुए कहा है, क्या विष्णु बन करके राष्ट्र को विचारना होगा। मानो देखो राजा के राष्ट्र में चार नियम नहीं होंगे जब तक राष्ट्र ऊँचा नहीं बनेगा। मानो देखो राजा अपने राष्ट्र को यदि ऊँचा बनाना चाहता है–भगवान् मनु ने इस संसार में सबसे प्रथम जैसा मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया, सबसे प्रथम भगवान् मनु ने इस राष्ट्र का निर्माण किया। मानो देखो राष्ट्र की उपलब्धियाँ थीं क्योंकि समाज में उत्तम पुरुष की पूजा करनी है। आततताईयों को अनुशासन में लाना है, उनको अनुशासन में ला करके ही मानो देखो, अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना है। राष्ट्र का

अभिप्राय ये है क्या प्रत्येक प्राणी अपने-अपने कर्तव्य का पालन करने लगे और यदि राजा स्वतः कर्तव्य का पालन करेगा तो राज्य की प्रजा भी कर्तव्य का पालन करेगी। जब राजा देखो दूसरों के शृङ्गार को अथवा दूसरों के द्रव्यों को अपने ऐश्वर्य का साधन बना रहा है तो ये प्रजा कैसे ऊँची बनेगी। प्रजा उस काल में ऊँची बन सकती है जबकि वह स्वतः सदाचारी हो, याज्ञिक हो और याज्ञिक होकर के बुद्धिमानों के द्वारा राष्ट्र की पद्धति की वृत्तिका होनी चाहिए। मानो देखो जितने सम्प्रदाय हैं उनके आचार्यों को एकत्रित करके उनका शास्त्रार्थ होना चाहिए। मानो ज्ञान और विज्ञान में मानो देखो कोई भी धर्म हो, कोई धर्म नहीं होता धर्म तो एक ही होता है, कोई सम्पदाय हो जो मानो ज्ञान विज्ञान के ऊपर स्थिर न हो सके, अन्तिम वाक्य का राजा निर्णय करने वाला हो उसी प्रकार के विचारों का समाज रहना चाहिए, उसी प्रकार के विचारों का राष्ट्र में सम्प्रदाय रहना चाहिए। वह मानो देखो अपने में नाना प्रकार की रूढ़ियाँ समाप्त होनी चाहिए। उन रूढ़ियों का परिणाम, मानो देखो यदि राजा उन रूढ़ियों पे शासन नहीं करेगा तो एक समय वह आएगा क्या वह रूढ़ियाँ ही एक-दूसरे प्राणी को नष्ट करने के लिए तत्पर हो जाएगीं। देखो, धर्म को जो मानव जानता है राजा को चाहिए वह कहे, हे प्रजाओं तुम्हारा धर्म ये है। तुम धर्म के मर्म को जानने वाले बनो। जो धर्म के मर्म को जानने वाला समाज होता है, धर्म के मर्म को जानने वाला राष्ट्र होता है मानो देखो वही राष्ट्र, वही समाज पवित्र बन करके रहता है। उस समय वह यागों का पूजन होता है।

अशुद्ध वायुमण्डल

आज का जो विज्ञानवाद है—आधुनिक काल का विज्ञान मानो समुद्रों के तटों पर विद्यमान हो-करके, अपनी सभाओं में अपना निर्णय करता है कि वायुमण्डल दूषित हो गया है। यही कहते हैं कि

वायुमण्डल दूषित हो गया, आधुनिक काल का जो वायुमण्डल है एक समय पर वृष्टि नहीं हो रही है, अति वृष्टि कहीं-कहीं हो रही है। कहीं मानव नष्ट हो रहा है, तो कहीं मानव मानो देखो उष्णता से अग्नि के काण्ड में परणित हो रहा है। कहीं जल में प्रवेश कर रहा है मानो देखो इसके मूल में क्या है। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में कहा है क्या ये सब वायुमण्डल दूषित हो गया है। जहाँ दो प्राणी विद्यमान होते हैं वहीं अशुद्ध वाक्यों का प्रतिपादन करते हैं, या रक्तभरी क्रान्ति की चर्चाएँ करते हैं। मानो देखो राष्ट्र में, प्रत्येक प्राणी जब समाज में चिन्तित हो जाता है, राजा चिन्तित हो जाता है इसके मूल में क्या है– याग नहीं रहा, बुद्धिजीवी प्राणी नहीं रहे, जब बुद्धिजीवी प्राणी नहीं रहे तो याग नहीं रहा और याग का पूजन नहीं रहा तो मानो देखो ब्रह्म ज्ञान नहीं रहा और जब ब्रह्म ज्ञान नहीं रहा तो राजा कैसे निर्भय हो सकता है। देखो राजा तो समाज में उस काल में ऊँचा बनता है जब उसके द्वारा क्रियात्मक ब्रह्मज्ञान होता है, मृत्यु का भय नहीं रहता और जहाँ राजा को मृत्यु का भय बना रहता है मृत्यु के लिए वह अपने रक्षाथियों को अपने समीप लाता है वो कोई राजा नहीं होता। वेद की भाषा में उसको राजा नहीं कहते, मानो वो तो एक प्रकार का अशुद्ध वृत्तियों कहलाता है। मानो देखो इसके ऊपर जब हम विचार विनिमय करते हैं तो ऐसा हृदय त्राही-त्राही हो जाता है ये समाज में क्या हो रहा है। राजा को ब्रह्म ज्ञान नहीं है मानो एकोकी धर्म का चरण नहीं है। जब राष्ट्र ये कहता है नाना धर्म होते हैं, अरे राजन्! अरे तू! कैसा बन गया है। अरे! नाना धर्म तो होते ही नहीं, धर्म तो केवल एक होता है। नाना धर्म जब तू उच्चारण करता है तो मेरा हृदय तो ऐसा बन जाता है ये क्या हो रहा है समाज में। अरे! वायुमण्डल को भी अशुद्ध कर रहे हो नाना धर्म कह करके। अरे! धर्म तो एक कहलाता है। जब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से इन वाक्यों को लाता हूँ तो विचार आता है मेरे

अन्तर्हृदय में क्या ये जो नाना प्रकार की रूढ़ियाँ हैं जिनको नाना धर्म कहता है आज का राष्ट्र, मानो देखो ये एक अशुद्ध है। एक ही धर्म है उसी धर्म को लाना चाहिए जिसमें सुगन्धि हो, जिस विचारधारा में सुगन्धि हो, व्यापकवाद हो, मानव दर्शन हो, विज्ञान हो, तरङ्गों पर तरङ्गित होने वाला प्राणी हो, अरे! वही तो धर्म कहलाता है। जब मैं ये विचारता हूँ मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में नाना वार्त्ताएँ प्रकट की हैं। नाना विचार दिए हैं परन्तु उन विचारों से मैं ये स्वीकार करता हूँ कि ये समाज बहुत दूरी चला गया अपने कर्तव्य से। जब मैं अपनी प्यारी माताओं से ये प्रश्न करता हूँ हे माता! तू कहाँ चली गयी तेरे कण्ठ में तो मानो विद्या होनी चाहिए थी, तू स्वर्ण के आभूषणों को अपना करके तू अपने को सजातीय बनाना चाहती है। हे माता! तू मदालसा की भाँति जो अपने पुत्र को तू मानो बुद्ध शुद्ध कह करके उपदेश देती है तो वह बालक तेरा विवेकी बन करके ब्रह्मवेत्ता बन जाता है। मानो ब्रह्मवेत्ता बन करके वही तो राष्ट्र की उपलब्धि है, वही माता के गर्भाश्य को स्वर्ग की आभा का उच्चारण करना है।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे संसार की बहुत सी वार्त्ताएँ स्मरण करायी हैं। आज मैं उन वाक्यों में तो जाना नहीं चाहता हूँ केवल विचार ये देना चाहता हूँ क्या मानो देखो जब यागों में मांसों की आहुतियाँ दी जाने लगीं मानो देखो महा की आहुति देना था वहाँ प्राणियों को नष्ट करके आहुति देने लगा प्राणी अपनी रसना के स्वादिष्टा में। मानो देखो महा एक फल होता है उसकी आहुति देना तो अनिवार्य है, उससे वायुमण्डल में अपने पौष्टिक परमाणुओं की उपलब्धि हो जाती है। परन्तु देखो जहाँ ये मांस देखो दूसरे प्राणियों का अहा! एक-एक परमाणु मानो उसमें प्रदान किया जाता वह कितना अशुद्धवाद है। आज भी पर्वतीय क्षेत्रों में प्रायः ऐसा क्रियाकलाप होता रहता है। परन्तु जब मैं विचारता रहता हूँ प्रायः वो समाप्त होने जा रहा है।

साधु

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव उसको मैं कई काल में ये उच्चारण कर गया हूँ कि राष्ट्र जब तक ऊँचा नहीं बनेगा राष्ट्र में जब तक कर्तव्यवाद नहीं आएगा राजा मैं, जब तक समाज कर्तव्य का पालन नहीं कर सकता है। परन्तु देखो, **ब्राह्मण जब तक विवेकी नहीं बनेगा जब तक राष्ट्र का प्रोत्साहन उसके लिए नहीं होगा।** मुझे बहुत-सी वार्त्ताएँ स्मरण आती रहती हैं। एक समय मेरे पूज्यपाद गुरुदेव और हमने यह विचार बनाया चलो आज हम देखो प्रजापति राजा के यहाँ गमन करेंगे। जब भ्रमण करते हुए मानो गमन किया तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव हम जब प्रजापति के द्वार पर पहुँचे तो उन्होंने स्वागत किया। देखो, प्रजापति उनकी धर्म देवी ने चरणों की वन्दना करते हुए, उन्होंने कहा आइए भगवन् आप अन्न का पान कीजिए। पूज्यपाद गुरुदेव ने ये कहा क्या मैं अन्न का पान नहीं करूँगा। क्यों नहीं करोंगे? क्या तुम्हारा जो राष्ट्रीय अन्न है वो रजोगुण तमोगुणों में सना हुआ अन्न है इसीलिए हम उसे पान नहीं करेंगे क्योंकि हमारी प्रवृत्ति रजोगुण और तमोगुण की बन करके हमारे जीवन का विनाश हो जाएगा। जब देखो पूज्यपाद गुरुदेव ने ये कहा, तो राजलक्ष्मी और राजा दोनों ने नतमस्तक हो करके बोले कि प्रभु! मैं तो स्वयँ कला कौशल करता हूँ और वह द्रव्य को एकत्रित करके मैं उसे पान करता हूँ और मैं राष्ट्र का क्रियात्मक कर्म कराता हूँ और उस अन्न को पान करके मेरी बुद्धि शुद्ध रहती है। तो तब मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने और मानो देखो कुछ अन्न का पान किया। विचार-विनिमय क्या आज का जो वह पूर्वकाल का साधु कितना महान् था। मानो पूर्व काल का साधक देखो, ऋषि कितना महान् था जो राजा को भी यह कह देता कि मैं इस अन्न को पान नहीं करूँगा। आधुनिक काल का साधु इस प्रकार का है क्या उसके द्वारा कोई मानो देखो राज्य का ऊँचा कर्मचारी आ जाए तो साधु बहुत प्रसन्न हो रहा है और उसकी प्रसन्नता में वह मानो

देखो उसकी सेवा कर रहा है। यदि उसके द्वारा राजा आ जाए तो कहता है वो तो मेरे सब शिष्य कहलाते हैं परन्तु देखो उनकी वार्त्ता को स्वीकार करे या ना करें। परन्तु देखो एक प्रकार का ये पाखण्ड हो रहा है। मैं इसी को तो पाखण्ड कहता हूँ। अरे! साधु तू इतना महान् साधना वाला बन जिससे तू राजा को अपनी बुद्धि से उसके अकर्तव्य पर तो राजा को मानो देखो अपने में उसे अपनी ओजस्वी वाणी में तू उसे कुछ दान कर सके और यदि तू अपनी ओजस्वी वाणी में तू अपने धर्म और मानवता की रक्षा नहीं करा सकता राजा से तो उसके आने का तुम्हारे द्वारा लाभ क्या होगा।

राजा और प्रजा

मानो देखो इसका अभिप्राय ये है क्या यजमान साधक तपस्वी न होने से देखो वह राजा अपने में मनमाना अपना क्रियाकलाप हो रहा है। नाना प्रकार की रूढ़ियों का जन्म हो रहा है और उन रूढ़ियाँ का जन्म होने से ही देखो राष्ट्र का विनाश हो रहा है। राष्ट्र के विनाश में एक-दूसरे के विचारों पर आक्रमण हैं। एक-दूसरे के शरीरों पर आक्रमण हो रहा है। एक-दूसरे को देखो रक्त की धारा बनी हुई है। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये उच्चारण कर रहा हूँ क्या ये समाज किस धारा में रत्त हो गया है। अरे! एक-दूसरे को स्वार्थ में रक्त का पान कराना ही क्या ये मानवता है। इसको मानवता नहीं कहते। देखो मौहम्मद के मानने वाले कहते हैं हिन्दू समाज नहीं रहना चाहिए। देखो, आर्यों को हिन्दू उच्चारण किया जाता है, ये कितनी मानो देखो हीनता का शब्द है। ये राष्ट्र के लिए भी हीनता का शब्द है। वो चाहते हैं कि ये न रहें समाज में परन्तु देखो ईसा के मानने वाले कहते हैं हम ही हम रह जाएँ परन्तु देखो बौद्ध कहते हैं हम ही हम रह जाएँ, जैन कहते हैं हम ही हम रह जाएँ, तो ये कैसे समाज ऊँचा बने। ये उस काल में ऊँचा बनेगा जबकि राष्ट्र ऊँचा होगा, जबकि राजा पवित्र होगा और राजा

अपने पर अनुशासन करे और राज के अनुशासन करने पर भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के आचार्यों का शास्त्रार्थ होना चाहिए, जब वेद की मानो उपलब्धि हो करके वेद के मन्त्रार्थ को अग्रगणीय बना करके, ज्ञान और विज्ञान को लेकर के ये राष्ट्र ऊँचा बन सकता है। अन्यथा कोई भी कारण मुझे ऐसा प्रतीत नहीं हो रहा है जो ये राष्ट्र ऊँचा बन जाए, क्योंकि द्रव्य की लोलुपता राजा को है, तो प्रजा को है। चरित्र की मानो देखो ऐशबन्दी राजा में है तो प्रजा में है। मानो देखो इसी प्रकार ये समाज बना हुआ है और नाना प्रकार के सम्प्रदायों में और नाना प्रकार की रूढ़ियों में ये समाज रत्त हो रहा है, राष्ट्र रत्त हो रहा है। मैं ये कहता हूँ हे प्रजाओं! राजा से पुकार करो कि हमारे राष्ट्र में नाना प्रकार रूढ़ी नहीं होनी चाहिएँ, नाना प्रकार के रक्त का मानो पान नहीं करना चाहिए एक दूसरा प्राणी, ऐसा जब उस काल में होगा जब एक ही विचारधारा हो, एक ही महानता हो तो ये समाज ऊँचा बनेगा। ये है आज का हमारा वाक् अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

आज के हमारे उच्चारण करने का अभिप्राय ये है क्या याग का तिरस्कार होने से ही महाभारत के काल से आपत्ति आना प्रारम्भ हो गया था। अकर्त्तव्यवाद प्रारम्भ हो गया था। मानो राष्ट्र में महाभारत काल में ही ऐसा हो गया था। महाभारत काल की मानो देखो उपलब्धियाँ बड़ी अशुद्ध हैं। महाराजा शान्तनु कहता है अपने पुत्र से मेरा संस्कार हो जाए और तू जीवन भर ब्रह्मचारी रहे। परन्तु देखो ये सबसे प्रथम अशुद्ध शब्द था इस महान्, देखो वह कलंकित करने वाला राष्ट्र के लिए एक ही शब्द था, उसी की उपलब्धि यहाँ तक ले आयी है प्राणी को। तो ये आज का वाक् हमारा समाप्त। अब मुझे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे आज्ञा देंगे, तो मैं शेष चर्चाएँ मानो प्रकट करूँगा। आज का वाक् समाप्त, आज मेरा जो विचार है हे यजमान! तुम्हारे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, द्रव्य का तेरे गृह में सदैव सदुपयोग होता रहे

ऐसी मेरी कामना है। **सदुपयोग करना मानो याग करना है। बुद्धिमानों वेद का प्रसार करना है।** वेद के मन्त्रों में सर्वत्र ज्ञान और विज्ञान निहित रहता है। ये आज का वाक्य समाप्त। अब वेदों का–मेरे पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने बहुत से विचारणीय शब्दों को उच्चारण किया क्योंकि इनके हृदय में एक दाह, एक विड़म्बना रहती है और विड़म्बना है कि वैदिकता को कैसे ऊँचा बनाया जाए, वेद मन्त्रः कैसे उद्घोषित हो सकें। तो ऐसा इनका विचार आज हमने श्रवण किया। इनके विचारों में एक दाह है। तो विचार ये चल रहा था कि हमारा जीवन का जो क्रियाकलाप है वो दार्शनिकता में मानो यागों का वर्णन चल रहा था। मेरे पुत्र ने भी यागों का ही वर्णन किया है परन्तु याग इतना ऊर्ध्वा में रहना चाहिए जैसे शिकामकेतु ऋषि की हम चर्चा कर रहे थे, मानो देखो वैशम्पायन की चर्चा कर रहे थे। तो आज का हमारा वाक्य अब समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा, इसके पश्चात् वार्त्ता समाप्त हो जाएगी।

ओ३म् ब्रह्म भू रेवम् आपो रथम् ब्रह्म वाचमपाऽम्,
ओ३म् स्वञ्जनारथम् आभावर्णुवृहिविपा।
आभाऽम् ओ३म् सर्वम् भ्रदाः माम् गताः।।

दिनाँक : 30 जून, 1985
समय : प्रातः बजे
स्थान : चान्दना नंगली।

।। ओ३म् ।।

शिव-सङ्कल्प व्याख्या

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेद वाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वह परमपिता परमात्मा कल्याणकारी हैं। वह हमारा देवों का देव है। उसे हमारे यहाँ देवों का देव कहा जाता है। वह वृष्टि करने वाला है। वह परमपिता परमात्मा जो कल्याणकारी शिव कहलाता है। हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों को गुणवादन करते रहते हैं। हमारा प्रत्येक वेद मन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महत्ता का वर्णन करता रहता है क्योंकि वह परमपिता परमात्मा ज्ञान और विज्ञानमयी स्वरूप माने गए हैं। क्योंकि जब वह कल्याणकारी है तो वह स्रोत कहलाते हैं। इसीलिए आज हम उस महामना अपने प्यारे देव की महिमा का गुणगान गाते चले जा रहे थे।

व्रती बनने की प्रेरणा

हमारा वेद मन्त्र यह कहता है कि हमें शिव की उपासना करनी चाहिए। प्रत्येक मानव को व्रती रहना चाहिए क्योंकि **जो व्रती मानव है वही तो महान् महामना उस देव की उपासना कर सकता है** और जिसके द्वारा व्रत नहीं होता, जो व्रतों का स्वामी है वह इसको विश्वास नहीं कर सकता। तो इसीलिए हमारा वेद मन्त्र यह कहता है **हे मानव! तू अपने को व्रती बना।** क्योंकि व्रत करने वाला मानव संसार में महान्

कहलाता है। मानव जब व्रती बनता है तो अन्तरात्मा की जो ध्वनियाँ उत्पन्न होती रहती हैं उन ध्वनियों के साथ में अपनी प्रवृत्तियों का समन्वय करता रहता है और जब वह ध्वनियों का मिलान होता है तो मानव व्रती बना करता है।

मुझे स्मरण आता रहता है ऋषि-मुनियों का जीवन। एक-एक वेद मन्त्र को लेकर के वह व्रत को धारण करते रहे हैं और वह अपने में व्रती बना करते हैं। जैसे हमारे यहाँ याज्ञिक, याग करने वाला अपने में व्रती बना रहता है और जब वह व्रती बन जाता है तो उसकी अन्तरात्मा की जो पवित्र ध्वनि है वह परमपिता परमात्मा को अग्रगणीय बनाते हुए अपने में महान् बना करती है। संसार का कोई भी प्राणी हो, सबसे प्रथम वह व्रती बनता है। संसार में जब माता-पिता अपने में व्रती बनते हैं तो उसके पश्चात् वह महानता की प्रतिभा को जन्म देते हैं। उस महानता का जब जन्म हो जाता है तो उस का नामोकरण पवित्र बन जाता है।

शिव के स्वरूप

इसीलिए वेद का मन्त्र कहता है, हे मानव! तू शिव, उस परमपिता परमात्मा की उपासना कर। अनादिकाल से जिसकी ऋषि-मुनि उपासना करते रहे हैं और शिव-सङ्कल्पवादी बने हैं। क्योकि **शिव कहते हैं जो सङ्कल्पवादी है,** उसका नामोकरण शिव कहा जाता है। हमारे यहाँ जो रात्रि को अन्धकार से प्रकाश में लाने वाला है वही तो शिव कहलाता है। तो हमारे आचार्यों ने जब शिव की उपासना करनी प्रारम्भ की, शिव नाम हमारे वैदिक-साहित्य में भिन्न-भिन्न प्रकार के रूपों में उसका रूपण किया गया है। शिव नाम परमपिता परमात्मा का है और जहाँ शिव नाम परमात्मा को कहते हैं वहाँ शिव नाम सूर्य को कहा गया है वह सूर्य अन्धकार से प्रकाश को उत्पन्न करने वाला है, प्रकाश को लाने वाला है। वह स्वतः अपने में प्रकाशित रहता है। तो शिव नाम हमारे

यहाँ सूर्य को कहा जाता है। मैंने बहुत पुरातन काल में कुछ चर्चाएँ की हैं और विचार दिया है कि हमारे यहाँ जब सूर्य अपने में प्रकाश देता है तो रात्रि के अन्धकार को अपने में धारण करने लगता है। इसी प्रकार जैसे अन्धकार को धारण किया जाता है, यह जो सूर्य प्रातःकाल में उदय होता है वह अन्धकार को अपने गर्भ में धारण कर लेता है। यह पृथ्वी जब विष उगलने लगती है, ऊष्ण बन जाती है तो वह सूर्य ही अपने आभा में विष को निगल जाता है और वृष्टि का प्रादुर्भाव हो जाता है। वृष्टि प्रारम्भ हो जाती है और वृष्टि के मूल में वही अमृतमयी होता है जिस अमृत को पान करने के पश्चात् मानवीय आभा में सदैव मानव रत्त रहने लगता है और पृथ्वी अपना विष उगलना शान्त कर देती है।

मुनिवरो! हमें विचारना यह है कि हम विष को अपने में धारण न करें। अमृत को लाने का प्रयास करें। हम स्वतः अमृतमयी बनने का प्रयास करें। हमारा वेद मन्त्र क्या कहता है? वेद मन्त्र यह कहता है कि हे शिव! तू कल्याणकारी है। तू कल्याणकारी आनन्द को प्रदान करने वाला है। इसीलिए उस महान् देव को हमारे यहाँ शिव कहा जाता है। इसीलिए मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे कई काल में वर्णन कराया कि शिवरात्रि आती है और शिवरात्रि क्यों कहा जाता है? हमारे यहाँ परम्परागतों में, अतीत के काल की नाना प्रकार की शिव की गाथाएँ आती रहती हैं। यह गाथाएँ अपने में अद्वितीय मानी जाती हैं। मैंने इन गाथाओं को कई काल में प्रकट करते हुए कहा है कि शिव नाम जो अन्धकार को नष्ट करने वाला है, प्रकाश में जो समाज को लाने वाला है उसका नाम शिव है। पुरातन काल में हमारे यहाँ शिव नाम के राजा हुए हैं और वह शिव नाम के राजा अपने राष्ट्र का शुद्धिकरण करते रहते थे। अपने राष्ट्र में वेदों की प्रतिभा को प्रतिभाषित करते रहते थे। शुद्धिकरण करते हुए उसको महानता की वेदी पर लाने का प्रयास करते रहते थे। तो विचार-विनिमय क्या? शिव नाम यहाँ राजा को कहा गया है। राजा

अपने राष्ट्र में अपने को शिव-सङ्कल्पवादी बनाता है। शिव नाम जो कल्याणकारी है परमपिता परमात्मा का नामोकरण कहा जाता है। वही शिव हमें एक महानता की ज्योति को प्रदान करने वाला है।

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें देने नहीं आया हूँ। विचार केवल यह देने के लिए आया हूँ कि हमें अपने में महान् और विचित्र बन करके परमपिता परमात्मा के सङ्कल्प को धारण करना है जिस सङ्कल्प के द्वारा हमारी मानसिक प्रवृत्तियाँ ऊँची बन जाएँ। राजा के राष्ट्र का वर्णन प्रायः हमारे वैदिक साहित्य में आता रहता है कि राजा का नामोकरण भी शिव कहा जाता है। वह जो शिव हमारा कल्याणकारी है। मुनिवरो! शिव नाम पिण्ड को भी कहा जाता है। वह पिण्ड कौन-सा है जब सृष्टि का प्रारम्भ होता है तो मुनिवरो! वह परमपिता परमात्मा जो शिव कहलाते हैं जो कल्याणकारी हैं उसकी आभा में उसका जन्म होता रहता है। विचार-विनिमय क्या? इस पिण्ड का आकार बना करता है और पिण्डाकार का अपने में जब समन्वय होता है तो उसकी भिन्न-भिन्न प्रकार की विभक्त क्रियाएँ बन जाती हैं और वह भिन्न-भिन्न स्वरूपों में परणित होता रहता है।

सङ्कल्पमयी बनें

विचार-विनिमय क्या? मुनिवरो! आज का हमारा वेद मन्त्र यह कहता है कि हमें अपने में शिव सङ्कल्पवादी बनना है और परमपिता परमात्मा के ब्रह्माण्ड को पिण्डाकार में हमें दृष्टिपात करना है जैसे पिण्डाकार वाला यह जो ब्रह्माण्ड है यह अपनी आभा में एक-एक परमाणु पिण्डाकार बना हुआ है। पिण्डाकार बन करके अपनी आभा में निहित हो रहा है। हमारा वेद मन्त्र क्या कहता है कि हम परमपिता परमात्मा की उपासना करते हुए उस परमपिता परमात्मा को अपना उपास्य देव स्वीकार करते हुए इस संसार सागर से पार होने का हमें प्रयास करना है। आज का हमारा वेद मन्त्र हमें एक ऊँची प्रेरणा दे

रहा है, ऊर्ध्वा में गति बना रहा है क्योंकि यह संसार अपने में अद्वितीय रूपों में रत्त होने वाला है। आज का हमारा जो विचार है वह उद्गीत गा रहा है कि हमें उस परमपिता परमात्मा के विशुद्ध रूप का वरण अपने में शिव सङ्कल्पवादी बनना चाहिए जिससे हमारा मन पवित्रता की वेदी पर रत्त हो जाए। हे प्राण स्वरूप! हमारा जीवन अपने में उद्गीत गाने वाला महानता की आभा में रत्त रहने वाला हो। आज का हमारा जो वैदिक साहित्य है वह हमें अपने में पुकार रहा है। वैदिक साहित्य यह कहता है **हे मानव तू अपने में याज्ञिक प्रतिक्रियाओं में रत्त होता चल।** वह जो गतेषु ब्रह्मा है उस परमपिता परमात्मा की उपासना करनी चाहिए। हमारे यहाँ रजोगुण, तमोगुण की आभा में भी प्रायः ऐसा हुआ करता है। रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण यह तीन गुण कहलाते हैं। मानव को अपने में सतोगुणी बनना है, हमें सत्य को धारण करना है। सत्य को धारण करते-करते हमें शिव सङ्कलपवादी बनना है और शिव सङ्कल्पवादी बन करके अपने में अपनेपन की धारा को अपना करके इस सागर से पार हो सकते हैं। हम में विवेक की मात्राएँ उत्पन्न हो जाती हैं। जब विवेकी बन जाते हैं तो संसार का जितना क्रियाकलाप हो रहा है वह कहीं रजोगुणी में हो रहा है, कहीं सतोगुण में हो रहा है, कहीं अपने में तमोगुणी बना हुआ है और अपनी आभा में नियुक्त हो करके इस संसार सागर से पार हो जाता है।

महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज द्वारा शिव की विवेचना

मुनिवरो! आज मैं विवेक की चर्चा नहीं कर रहा हूँ। विचार केवल यह देना चाहता हूँ परमपिता परमात्मा विज्ञानमयी शिव सङ्कल्पवादी हैं। आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता अपने में आध्यात्मिक धारा को प्रायः जन्म देते रहते हैं। वही तो प्राण स्वरूप कहलाता है। मैं तुम्हें ऋषि-मुनियों के क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ ऋषि-मुनि अपने में विद्यमान हो करके उस शिव की उपासना करते रहे हैं जो शिव हमारा कल्याणकारी है।

हमें एक प्रेरणा देता है। हमें एक महानता का दर्शन कराता है। मेरे पुत्रो! एक समय महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के द्वारा कुछ ऋषि-मुनि पहुँचे और कहा कि हम वेदों में यह अध्ययन करते रहते हैं कि यह शिव क्या है? यह शिव कल्याणकारी कहलाता है। आपके विचार में शिव क्या है? वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा कि यह जो शिव है यह हमारा कल्याण करने वाला है। क्योंकि शिव उसे कहते हैं जो अन्धकार से प्रकाश में लाने वाला हो। इसीलिए अन्धकार को मानव को त्यागना चाहिए। तो कुछ ब्रह्मचारियों ने यह कहा कि महाराज यह अन्धकार क्या है और प्रकाश क्या है? महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज बोले अन्धकार तो कहते हैं रात्रि को और दूसरे रूपों में अन्धकार कहते हैं अज्ञान को। इसीलिए मानव को अन्धकार को त्याग देना चाहिए और प्रकाश को लाना चाहिए। आज हम जब प्रकाश की विवेचना करने लगते हैं तो प्रकाश में ब्रह्माण्ड की प्रत्येक चर्चाएँ आ जाती हैं। कहीं आध्यात्मिकवाद को हमारे यहाँ प्रकाश कहा जाता है, कहीं प्रकाश ऊर्ध्वा में जो ज्ञान है उसको हमारे यहाँ प्रकाश कहा जाता है। परन्तु **वेद का ऋषि यह कहता है कि मानव अपने ही प्रकाश में रत्त हो जाता है। अपनी अन्तरात्मा जो प्रकाश दे रही है, वही प्रकाश कहा जाता है।** हमें उस प्रकाश के लिए सदैव रत्त रहना चाहिए। वही प्रकाश हमारा एक मानवीयता का जीवन कहा जाता है। तो मुनिवरो! वेद का विचारक कहता है, ऋषि-मुनि कहते हैं कि वशिष्ठ मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियों के मध्य में यह कहा कि वही प्रकाश है जो मानव की अन्तरात्मा में निहित रहने वाला है। हम उस प्रकाश के लिए प्रयास करें। उसके प्रयास में लगे रहें जिससे वह प्रकाश हमारे समीप आ जाए। वही शिव सङ्कल्पवादी एक प्रकाश कहा जाता है।

वर्णन करते हुए, एक ऋषि ने यह प्रश्न किया कि महाराज! शिव नाम तो राजा को कहते हैं। उन्होंने कहा कि उस राजा का नाम भी

शिव है जो राजा अपनी कुशलता से अपने ज्ञान से, विज्ञान से इस प्रजा में शान्ति की स्थापना कर जाए। उसका नामोकरण भी शिव कहा जाता है। जिस राजा के राष्ट्र में इतने ऊँचे विचारों वाली प्रजा होती है जैसे हिमालय अपने में ऊर्ध्वा में रहता है इसी प्रकार प्रजा में जब इस प्रकार के विचार होते हैं, ऊर्ध्वा में विचार होते हैं तो उस प्रजा का जो स्वामी है नेतृत्व करने वाला उसका नाम शिव कहा जाता है। जैसे विद्यालय में ब्रह्मचारियों को आचार्य अध्ययन कराता है और प्रकाश में लाने का प्रयास करता है तो वह एक शिव सङ्कल्पवादी अपने में धारणामयी बना हुआ है। तो विचार क्या, वशिष्ठ मुनि महाराज ने भी इसका यह मन्तव्य दिया कि मानव को प्रकाश में जाना चाहिए। वह सूर्य अपने में प्रकाशक कहा जाता है। वह सूर्य अपने में शिव कहा जाता है जो पृथ्वियों को, उसके विष को अपने में निगलने वाला है। जब पृथ्वी की माला बनती है उस माला को अपने में धारण करने वाला यह शिव कहलाता है। यह कौन शिव सूर्य को कहा जाता है। इसके अन्तर्गत गति करने वाली नाना पृथ्वियाँ हैं और वह पृथ्वियों की माला बना करके अपने में धारण कर रहा है। यह पृथ्वी हमारा देवता है। यह नाना प्रकार के गुरुत्व पदार्थों को हमें प्रदान करने वाला है। वही गुरुत्व परमाणु प्रत्येक लोक-लोकान्तरों में प्रायः प्राप्त होते हैं। क्योंकि बिना गुरुत्व के कोई भी लोक लोकान्तर का निर्माण नहीं होता। तो वह जो शिव है सूर्य है वह अपनी ऊर्जा से नाना पृथ्वियों को धारण कर रहा है। उन पृथ्वियों की माला बना रहा है और माला बना करके अपने में धारण कर रहा है। वही पृथ्वियों को सान्त्वना देने वाला है। जब ग्रीष्म ऋतु का काल आता है और ग्रीष्म ऋतु में यह पृथ्वी तपायमान हो जाती है और विष उगलने लगती है, इस विष को कौन धारण करता है? देवताजन उपासना करते हैं और यह कहते हैं हे शिव! आओ, तुम हमें अमृत की वृष्टि करो। तो वही शिव अपने में मेघों की उत्पत्ति करता हुआ वह अपनी

ऊर्जा से जल को अपने में धारण करके भीनी-भीनी वृष्टि कर देते हैं। उस वृष्टि का मूल कारण यह बनता है कि वह पृथ्वी विष उगलना शान्त कर देती है और वह जो विष उगला हुआ उसको सूर्य अपने में धारण करने लगता है।

पिण्डाकार शिव की उपासना

मेरे प्यारे! मैंने तुम्हें कुछ सूक्ष्म सी माला की चर्चाएँ की हैं। विचार-विनिमय क्या? पिण्डाकार जो शिव है उसकी हमें उपासना करनी है और उपासना करके हमें अपने में व्रती बनना है जैसे सृष्टि के प्रारम्भ में यह सूर्य व्रती बना हुआ है और सूर्य अपने व्रत को धारण करके संसार को तपाता रहता है। यह पृथ्वी नाना प्रकार की ऊर्जा को प्रदान करने वाली है। नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों को अपने में सङ्कल्पवादी बन करके मानव के जन-जीवन, प्रत्येक प्राणी के जन-जीवन को ऊँचा बनाने वाली है। तो विचार क्या? हमें अपने में महान् बन करके उस देव की उपासना करके इस संसार सागर से पार होना है। मैं इन मालाओं की चर्चा तो तुम्हें कराता ही रहूँगा। कल मैं यह चर्चा करूँगा कि यह सूर्य विष और अमृत को कैसे इस पृथ्वी पर भिन्न-भिन्न करता है। राजा और प्रजा के विष को कैसे भिन्न-भिन्न किया जाता है। यह चर्चाएँ कल प्रकट करेंगे। आज के विचार उच्चारण करने का अभिप्राय क्या? कि हम शिव सङ्कल्पवादी बनें। आज मैंने कुछ भूमिका बनायी है। आज का वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय क्या कि हम परमपिता परमात्मा की उपासना करते रहें और ऋषि-मुनियों का निश्चित किया हुआ जो शिव सङ्कल्प है उसे अपने में धारण करते हुए ज्ञान और विज्ञान की उड़ान उड़ते रहें। परमपिता परमात्मा का जो यह जगत् है, यह बड़ा अनूठा है। अपने में महानता का प्रदर्शन करता रहता है। यह है आज का वाक्य। अब समय मिलेगा मैं शेष चर्चाएँ तुम्हें कल प्रकट करूँगा।

आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि प्रत्येक प्राणी अपने में व्रती बनें और अन्धकार को समाप्त करके प्रकाश में अपने को लाने का प्रयास करे। प्रकाश ही मानव का जीवन है। अन्धकार ही मानव की मृत्यु है। यह है बेटा! आज का वाक्य। अब समय मिलेगा तो शेष चर्चाएँ कल प्रकट करेंगे। आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

महर्षि महानन्द जी—अच्छा भगवन्!
पूज्यपाद गुरुदेव—ओ३म् शान्ति!

दिनाँक : 9 मार्च, 1986
समय : दोपहर 3 बजे
स्थान : लाक्षागृह, बरनावा

।। ओ३म् ।।

कृष्ण का उपदेश

संग्राम में जब अर्जुन ने शस्त्र त्याग दिये थे तो महाराजा कृष्ण ने अर्जुन से कहा था ''अरे, अर्जुन! तुम किस काल की वार्ता उच्चारण कर रहे हो, यह तुम्हारे योग्य नहीं है, यह काल तो तुम्हारे संग्राम करने का है। यह आत्मा तो समाप्त नहीं होती। तू कौन सी अज्ञानता में आ रहा है? जब यह आत्मा समाप्त ही नहीं होती तो, तू किसको नष्ट करेगा, सब आत्माएँ विभु हैं, यह न जन्म लेती है न मृत्यु को प्राप्त होती है। यह आदेश पा करके अर्जुन ने प्रश्न किया, ''भगवन्! मैं यह जानना चाहता हूँ कि जब यह आत्मा समाप्त ही नहीं होती तो इसे अज्ञानता के कर्म में क्यों लगा रहे हो? उस समय योगेश्वर कृष्ण ने कहा, 'अरे अर्जुन! मानव का जैसा कर्म होता है, वैसा उसे भोगना पड़ता है। समय के अनुकूल कर्म करना भी अनिवार्य है। अपने कर्त्तव्य को पहचान।'' तो

देखो! आज मानव का कर्त्तव्य है कि समय के अनुकूल कार्य करें। शुभ वातावरण आए, शुभ वातावरण को भोगे। यदि समय अशुभ आ जाए तो वहाँ भी शुद्ध भोगने की चेष्टा होनी चाहिए जैसा हमारा धर्म कहता है। उसके अनुकूल अपने जीवन को अवश्य ऊँचा बना लेना चाहिए।

मानव जैसा कर्म करता है वैसा उसे भोगना अनिवार्य है। अन्तःकरण में उसके संस्कार नियुक्त रहते है परन्तु प्रतीत नहीं कि मानव का अन्तःकरण किस काल में जाग जाये। आज मानव को, विचारना चाहिए कि हमने जो कर्म किया है वह हमें भोगना अनिवार्य हैं इसलिए हमें शुभ कर्म करना चाहिए।

(तीसरा पुष्प, सरोजनी नगर, नई दिल्ली, ६ मार्च, १९९२)

भगवान् कृष्ण जिस समय कुरुक्षेत्र में युद्ध से पूर्व कौरव पाण्डव की सेनाओं के मध्य विराजमान थे, अर्जुन सखा उनके सहित थे। महाराजा अर्जुन, दोनों पक्षों को दृष्टिपात् करके शोकातुर हो गए, शोक में तल्लीन हो गए तो उस समय भगवान् कृष्ण ने कहा कि हे अर्जुन! यह मोह तुम्हें इस प्रकार क्यों आया है? देखो कर्त्तव्यवाद को जो मानव मोह के वशीभूत होकर त्याग देता है उस मानव का यह लोक और परलोक दोनों नहीं रहा करते, इसलिए आज तुम शोकातुर न हो। आज तुम अपने कर्त्तव्य और क्षत्रियपन को न त्यागो। तब अर्जुन ने कहा कि महाराज! आपने जो यह कहा कि ''सूर्या अंग्रते अब्रभाकृतिः'' कि सूर्य और अथर्वा को मैंने ज्ञान दिया, तो प्रभु! सूर्य तो परम्परागतों से है और अथर्वा को हुए बहुत समय हुआ और आपका जन्म तो हमें अभी प्रतीत होता है। उस समय भगवान् कृष्ण ने एक ही वाक्य कहा था कि हे अर्जुन! मै। उन जन्मों को जानता हूँ परन्तु तू नहीं जानता।

(बारहवाँ पुष्प, माडल टाउन, नई दिल्ली, ३ सितम्बर, १९९९)

भगवान् कृष्ण ने कहा कि ''हे अर्जुन! तू नहीं जानता और मैं जन्मान्तरों के बहुत से जन्मों को जानता हूँ क्योंकि मेरा जो जन्म है यह यौगिकता से परिणत रहता है। वह एक सुन्दरता से सुगठित रहता

है। इसलिए हे अर्जुन! आज तुम मुझे जानने का प्रयास करों। यह ज्ञान जो मैं आज तुम्हें अर्पित करा रहा हूँ यह ज्ञान और विज्ञान मैंने अथर्वा को और सूर्य को भी दिया था। पूर्व में भी कराता चला आया हूँ और इसके पश्चात् भी कराया है।

(बारहवाँ पुष्प, माडल टाऊन, नई दिल्ली, ३ सितम्बर, १९९९)

मैं बहुत से जन्मों को जानता हूँ परन्तु तू नहीं जानता है। वैवस्वत जो भगवान् मनु जी हुए हैं वह भगवान् मनु द्वितीय काल में हुए परन्तु उससे पूर्व काल में वह स्वायम्भव मनु महाराज के नाम से हुए। सर्वसृष्टि में चौदह मन्वन्तर होते हैं और चौदह मनु होते हैं। एक-एक मनु एक-एक अक्रत समय में आता रहता है। देखो, चार अरब बत्तीस करोड़ कुछ वर्ष की सृष्टि की अवस्था होती है। परन्तु उन अवस्थाओं में चौदह मनु होते हैं, ब्रह्म की सहस्र आयु होती है और चौदह मन्वन्तर होते है और प्रत्येक मन्वन्तर में एक मनु होता है। सृष्टि के प्रारम्भ में जो प्रथम मनु था, वह मनु भगवान् कृष्ण के 'रूपां वृत्ति आस्ति आत्मा ब्रह्मे कृति, वही आत्मा थी जिन्होंने सूर्य और अथर्वा को ज्ञान दिया क्योंकि सूर्य और अथर्वा सर्वप्रथम मन्वन्तर में हुए। इसी प्रकार द्वितीय मनु यह सातवां मन्वन्तर चल रहा है यह भी कुछ काल में समाप्त हो जाएगा और आठवां प्रारम्भ हो जाएगा। एक मन्वन्तर की आयु वृति मानी गई है जैसे ब्रह्मा का एक अहोरात्र होता है। अहोरात्र भी बड़ा विलक्षण माना गया। ब्रह्म की एक रात्रि एक कल्प के समान होती है, और एक कल्प के समान ब्रह्म का एक दिवस होता है इसी प्रकार ब्रह्म की सौ वर्ष की आयु होने के पश्चात् यह सृष्टि का प्रारम्भ समाप्त हो जाता है।

(बारहवाँ पुष्प, माडल टाऊन, ३ सितम्बर, १९९९)

भगवान् कृष्ण का जीवन किस प्रकार था। जिस समय उन्होंने महाराजा सूर्य और अथर्वा को ज्ञान दिया उस समय भगवान् कृष्ण कौन थे? यह विचारना है महाराज सूर्य को वैदिक ज्ञान और विज्ञान का प्रसारण कराने वाला कौन था? ऐसा कहा जाता है कि यही भगवान्

कृष्ण का आत्मा ही मनु जी का आत्मा था। उस काल में मानो कृष्ण का आत्मा ही मनु जी के शरीर में प्रविष्ठ हो रहा था। भगवान् मनु की पद्धतियों में प्रायः आता रहता है कि उनके जीवन में एक अग्नि की प्रतिभा ओत-प्रोत रही। भगवान् मनु ने सर्वप्रथम राष्ट्रीय विधान बनाया और उन्होंने कहा कि धर्म और मानवता की रक्षा करना राष्ट्र का परम उद्देश्य है। जिस राजा के राष्ट्र में धर्म और मानवता की रक्षा नहीं होती उस राष्ट्र की पद्धति को कदापि भी नहीं चुनना चाहिए। इस आत्मा का प्रथम जन्म भगवान् मनु का हुआ। उसके पश्चात् उन्होंने महाराजा सूर्य और अथर्वा को ज्ञान दिया क्योंकि भगवान् मनु के पुत्र का नाम सूर्य था। वह सूर्य नाम का महान राजा था। उसके पश्चात् उनके पुत्र का नाम अथर्वा था। उन्हीं को उन्होंने वह ज्ञान की विचार धारा और राष्ट्रीय पद्धति का वर्णन कराया और ब्रह्म ज्ञान दे करके वह अपने परमधाम को प्राप्त हो गए थे।

(बारहवाँ पुष्प, माडल टाऊन, नई दिल्ली, ३ सितम्बर, १९६९)

महाराजा अर्जुन से कई स्थान में कहा है कि हे अर्जुन! अपने जन्म जन्मान्तरों की बहुत-सी वार्ताओं को मैं जानता हूँ और तू नहीं जानता। महाराज कृष्ण ने केवल एक ही गान गया कि देखो, मैं जानता हूँ और तू नहीं जानता, यह आत्मा अमर, अजर, अविनाशी है और विभु (स्थिर, सर्वत्र गतिशील) है। देखो, यह परमात्मा महान् है। यह न कदापि जन्मता है और न कदापि नष्ट होता है, तू इसे मेरे अर्पण कर। मुनिवरों देखो, यहाँ गुरु और शिष्य का भाव आ जाता है। जब गुरु को शिष्य का अज्ञान समाप्त करना होता है, अज्ञान नष्ट करना होता है तो ज्ञानी गुरु अज्ञानी शिष्य से कहता है कि हे अज्ञानी! तेरे में जो अज्ञानता है वह मुझे दे, उसे तू मुझे अर्पण कर दे और हर प्रकार से तू मुझे ही मान और जब तू मुझे मान जाएगा, और अच्छी प्रकार जान जाएगा। जब तू ज्ञानी (गुरु) को अच्छी प्रकार जानेगा तो उस समय ज्ञानियों के भी ज्ञानी (गुरु) उस पूर्ण ज्ञानी परमात्मा को पा करके महान ज्ञानी बन जाएगा।

(प्रथम पुष्प, लोधी रोड, नई दिल्ली, १ अप्रैल, १९६२)

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. मनोहर जीवन बनाने के लिए मानव को सुन्दर योजना बनाने की आवश्यकता है।
2. वेद ऐसा कहता है यदि जननी माता चाहे तो गर्भाश्य में पुत्र को मोक्ष के द्वार पर ले जा सकती है।
3. आत्मा को माता के गर्भाश्य में जो महानता और शिक्षा प्राप्त हो जाती है वह सर्वांग जीवन भर में मानव प्राप्त नहीं कर सकता।
4. परमात्मा की आज्ञा पालन करना हमारा कर्तव्य है हमें संसार की त्रुटियों पर दृष्टि नहीं रखनी चाहिए।
5. वेद मन्त्र तो यह कहता है कि जो मानव दूसरों को जानना चाहता है वह अपने को जान लें।
6. आत्मा में ज्ञान और प्रयत्न स्वाभाविक होता है।
7. मानव का इस संसार में आने का उद्देश्य त्रिविधा को पाने का है।
8. त्रिविधा को ही गङ्गा कहा जाता है।
9. हमारे वेद की तीन विद्याएँ ही तीन गङ्गा हैं जिनको गङ्गा, यमुना, सरस्वती कहा जाता है।
10. सरस्वती नाम ज्ञान का है गङ्गा नाम कर्मकाण्ड का है और यमुना नाम उपासना का है।
11. कर्मकाण्ड करने से मन की शुद्धि होने लगती है। केवल शासन मात्र से इन्द्रियाँ शुद्ध हो जाती हैं।
12. जब उपासना काण्ड में पहुँचते हैं तो परमात्मा के समक्ष पहुँच जाते हैं।
13. देवता अच्छे संस्कार, अच्छी मान्यता और दैत्य काम, क्रोध मद, लोभ आदि हैं।
14. चौदह मनवन्तर माने गए हैं प्रत्येक मनवन्तर में एक मनु होता है जो राष्ट्र का निर्माण किया करता है।
15. स्वायम्भुव मनु उसी को कहते हैं जो राष्ट्र का ऊँचा निर्माण कर दें।
16. प्यारे प्रभु का मुख्य नाम ''ओ३म्'' है वह प्रत्येक वेद मन्त्र में प्रकाशित हो रहा है।

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

चिरंजीव अविरथ

श्रीमती नागेश त्यागी धर्मपत्नी श्री अरुण त्यागी निवासी राजनगर गाजियाबाद (उ.प्र.) ने अपने प्रिय सुपोत्र चिरंजीव अविरथ त्यागी सुपुत्र श्रीमती प्राची त्यागी धर्मपत्नी श्री आशीष त्यागी के पाँचवे जन्मदिन दिनाँक 16 सितम्बर 2018 की पावन वेला के शुभावसर पर पाँच हजार रुपए का अनुदान समिति के प्रकाशन के कार्य को प्रदान किया है। जिसके लिए समिति हृदय से आभार प्रगट करती है।

श्री त्यागी जी काफी लम्बे समय से समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए मासिक सहयोग प्रदान कर रहे हैं और पूज्यपाद गुरुदेव की यज्ञ परम्परा को अपने निवास पर प्रतिवर्ष आयोजित करने के साथ-साथ गाजियाबाद में सार्वजनिक यज्ञों का आयोजन समय-समय पर कराने में अग्रगणीय हैं जिससे कि समाज में यज्ञ की ज्योति का प्रसार निरन्तर इस क्षेत्र में बल प्रदान कर रहा है। अपनी उदारता को निरन्तर क्रियाशील बनाए रखने के लिए लाक्षागृह बरनावा और आसपास के क्षेत्र में होने वाले यज्ञों में अपना अनुदान स्वयँ ही पहुँचाकर पुण्य के भागी बन रहे हैं।

चिरंजीव अविरथ के जन्मदिन के शुभावसर पर बारम्बार शुभ कामनाएँ प्रगट करते हुए समिति समस्त परिवार को हृदय से सुख, शान्ति एवम् सर्वतोन्मुखी उन्नति की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती हैं।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

दान-सूची

वैदिक अनुसन्धान समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए निम्न याज्ञिक एवम् श्रद्धालु महानुभावों ने अपना सात्त्विक सहयोग प्रदान किया है :

1.	श्री ओमवीर आर्य, ननौता, सहारनपुर	101 रुपये
2.	श्री रामपाल चौधरी, सलेमाबाद	100 रुपये
3.	श्री दिनेश, सलेमाबाद	100 रुपये
4.	श्री हरिशंकर भारद्वाज, मोदीनगर	100 रुपये
5.	स. गमदूर सिंह, फफून्डा (मेरठ)	100 रुपये
6.	श्री नरेश कुमार, सरूरपुर खुर्द	170 रुपये
7.	श्री सोमदत्त राठी, बड़ौत	100 रुपये
8.	श्री आर्यन तौमर, शाहपुर, बडौली	100 रुपये
9.	श्री ललित, फिरोजपुर, खेकड़ा	100 रुपये
10.	मा. राकेश जी, सूजती	500 रुपये
11.	श्री छुट्टन लाल जी, धनौरा	200 रुपये
12.	मा. कालूराम जी, श्री उदयवीर जी, सूजती	1100 रुपये
13.	पं. बालकराम जी, नारंगपुर	50 रुपये
14.	श्रीमती उषा देवी, लक्ष्मीनगर, दिल्ली	501 रुपये
15.	श्री अशोक कुमार, बुढ़ाना (मु.)	100 रुपये
16.	डॉ. शिवकुमार, शाहपुर (मु.)	201 रुपये
17.	श्री हरपाल सिंह, शाहपुर (मु.)	101 रुपये
18.	श्री राकेश सैनी, काकड़ा (मु.)	500 रुपये
19.	श्री गोवर्धन सैनी, काकड़ा (मु.)	100 रुपये
20.	श्री सत्यपाल, काकड़ा (मु.)	101 रुपये
21.	श्री ब्रह्म सिंह, काकड़ा (मु.)	100 रुपये
22.	मा. ओमप्रकाश, दाहा	151 रुपये
23.	श्री भगीरथ शर्मा, दाहा	500 रुपये
24.	श्री यादराम, भमौरी, सरधना	100 रुपये
25.	मा. शिवराज, विपिन, वसुन्धरा	251 रुपये

26. श्री संजय उर्फ टीटू सुपुत्र श्री सोमदत्त त्यागी, तलहटा	1200	रुपय
27. श्री संजय उर्फ टीटू सुपुत्र श्री सोमदत्त त्यागी, तलहटा	5100	रुपये
28. श्री विजयपाल त्यागी, मेरठ	200	रुपये
29. श्री साहिल सुपुत्र श्री पूरन सिंह, दाहा	100	रुपये
30. श्री शीश पाल सिंह, मेरठ	100	रुपये
31. श्री जगदीश प्रसाद आर्य, मेरठ	100	रुपये
32. श्री विजय कम्बोज, इन्द्री	250	रुपये
33. श्री सीताराम दरोगा, शामली	100	रुपये
34. श्रीमती लता वर्मा, हापुड़	500	रुपये
35. श्री रामकुमार आर्य, काशीपुर	101	रुपये
36. श्री राजपाल वानप्रस्थी	100	रुपये
37. श्री दिवाकर खड़का, नेपाल	2760	रुपये
38. श्री प्रीतम सिंह, शामली	200	रुपये
39. श्री ओमपाल, शामली	51	रुपये
40. श्री राजकुमार सुपुत्र श्री उमराव, रासना	100	रुपये
41. श्री कन्हैयालाल, सरधना	200	रुपये
42. श्री कान्ता शर्मा, रासना	200	रुपये
43. मा. जयभगवान, कल्याणपुर	100	रुपये
44. त्रिशला, बरनावा	101	रुपये
45. श्री कालूराम त्यागी, (मु.)	501	रुपये
46. श्री सुशील, बड़ौत	21	रुपये
47. श्री आर्य जी, बड़ौत	21	रुपये
48. श्री नीरू अबरोल, लाजपतनगर, दिल्ली	2100	रुपये
49. श्री पूजा त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद	1100	रुपये
50. श्री शान्तनु त्यागी, पञ्चशील एन्क्लेव, नई दिल्ली	11000	रुपये

सभी उपरोक्त दान दाताओं का समिति हृदय से आभार प्रकट करती है और उनको परिवार सहित जीवन में सुख, शान्ति व सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	80.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	60.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	100.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	60.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	80.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	35.00
*9.	धर्म का मर्म	40.00
10.	शंका-निवारण	35.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	125.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	125.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	125.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	45.00
19.	महाभारत के रहस्य	30.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	60.00
22.	महाराजा-रघु का याग	30.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	35.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	35.00
25.	चित्त की व वृत्तियों का निरोध	35.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	35.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	40.00
29.	याग-मन्जूषा	40.00
30.	आत्म-दर्शन	30.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मात-दर्शन	30.00
32.	याग और तपस्या	60.00
33.	यागमयी-साधना	35.00
34.	यागमयी-सृष्टि	35.00
35.	याग-चयन	40.00
36.	दिव्य-रामकथा	120.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	35.00
38.	दिव्य-ज्ञान	40.00
*39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	90.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	40.00
41.	आत्म-उत्थान	40.00
*42.	तप का महत्व	40.00
43.	अध्यात्मवाद	40.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	40.00
45.	वैदिक-प्रभा	35.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	40.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	35.00
50.	आत्मा का भोजन	40.00
51.	साधना	35.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	80.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	80.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	80.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	80.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	80.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	80.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	80.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	50.00
65.	प्रभु-दर्शन	50.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	80.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	50.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	80.00
*69.	ब्रह्म की ओर	50.00
*70.	ईश्वर मिलन	50.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	80.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	80.00
*73.	नैतिक शिक्षा	50.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	100.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-2642052
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0122-2316196
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेदमन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) **PAN No. – AAAAV7866J**

पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली

बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFSC Code – PUNB–0014900

website : www.shringirishi.in

Email : contact@shringirishi.in

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या आनन्द को चाहता है, सुख को चाहता है परन्तु यह सुख कहाँ प्राप्त होता है? सुख हमें उसी काल में मिलता है जब हम सुख स्वरूप प्रभु को जान लेते हैं, ज्ञानमय आनन्द को जान लेते हैं, जिस ज्ञान-विज्ञान की महिमा को गाते हुए हमारे ऋषि-मुनियों ने भिन्न-भिन्न रूपों में अनेक अलंकारों में उस परमात्मा को अङ्कित किया। आज हमें परमपिता परमात्मा को अपने हृदय में अङ्कित कर लेना है, उस परमात्मन् इन्द्र को कल्याणकारी जान करके अपने मानवत्व को पवित्र बना लेना है।

हे परमात्मन्! तू कल्याण कर हमें ज्ञान और विज्ञान के शिखर पर ले जा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 46 : अंक : 552
सितम्बर 2018

मूल्यः
दस रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-09-2018
Published on 5th day of the same month